पाठ

श्री रूपभवानी रहस्योपदेश

18

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

श्री रूपभवानी रहस्योपदेश

संपादक :

डॉ. शिवनाथ शर्मा शास्त्री

श्री अलख साहिबा ट्रस्ट
दिद्दमर नवाकदल
श्रीनगर (कश्मीर)

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

प्रकाशक :
श्री अलख साहिबा ट्रस्ट (रजि.)
नवाकदल, श्रीनगर, (काश्मीर) भारत

© सर्वाधिकार प्रकाशन के अधिन
सुरक्षित है।

पुर्नमुद्रक :

तेजनाथ धर
सुपुत्र स्व. श्री श्रीधर ज्यू धर
(नवाकदल, श्रीनगर)
प्रभावती प्रकाशन
१५, रेशिमबाग,
नागपूर.

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

ॐ

श्री पराभट्टारिका महाशक्ति 'तदा तदावतीर्याहं' इत्यादि अपनी शुभ–प्रतिज्ञा के अनुसार जगत - कल्याण के कारण समय २ पर शरणीभूतों के कुलधर्म - जातिधर्म तथा देशधर्म की व्यवस्था को पुनः संस्कार करके तथा रक्षा और समुद्धार के लिए अवतीर्ण होती है। अनन्तर भौतिक रूप में अपने शारीरिक - कार्यक्रम से देश को शिक्षा देती हूई भक्तजनों को अपने रहस्य शास्त्र से उद्धार करती है, मर्यादा सनातन काल से श्रद्धेय एवं प्रचलित है।

इसी नीति - रिती को प्रत्यज्ञावस्था मे दिखाने के लिए श्रीजगदम्बा अपने अंशरूप में सन् १६७७ तदनुसार सप्तर्षी संवत् ४६९६ में अपने सद्भक्त श्री पं. माधव ज्यू दर के घर में माधवी - पूर्णा के असामान्य काल में श्रीरूपभवानी नाम से आविर्भूत हुई। आपकी अलौकिक बाललीला और प्रौढलीला देख कर उस समय के बडे २ कुलीन - सिद्ध - महात्मा और अमान्य धुरन्धर चकित से रहकर शरण आये। अपने अपने पितृकुल एवं श्रद्धालु शिष्यों तथा भक्तजनों को अपनी मातृभाषा में 'रहस्योपदेश' से उद्धार किया। और आगामि काल के लिए इस पथप्रदर्शक उपदेश को छोड कर (आप संवत् ४७९६ तदनुसार विक्रमी सन् १७७७) माघकृष्ण - सप्तमी को अपने कथनानुसार अवस्था के सौ (१००) वर्ष में परमधाम में लीन हुई।

इस काल में आपने जो २ कार्य देशशिक्षा के लिए व्यवहार में लाये और सिखाये हैं, वह निकट - भविष्य में भक्तों को आपके पवित्र 'जीवन चरित्र' द्वारा हिन्दीभाषा में सविस्तार पुरस्कृत करने की भी आशा श्रीअलख् ईश्वरी की कृपा से पूर्ण होगी।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

रहस्योपदेश :-

यह रहस्य - उपदेश आपके निर्वाण काल से लेकर कुछ समय तक गुरुक्रम में व्याख्यान रूप से ही चलता रहा, पुस्तक की आकृति में न था। फिर शक्ति की दुर्बलता के कारण इन उपदेशों ने ग्रन्थ का स्थान लिया, कहीं २ इसकी प्रति शारदा अक्षरों में उपलब्ध थी, विशेष करके फार्सी अक्षरों में इस ग्रन्थ का बहुत था, इसी कारण इसमें कहीं २ पाठ-भेद भी होता चला आया। कुछ समय पहले इन वाक्यों का मुद्रण भी हुआ था, पर मुद्रक को जैसा आदर्श मिला, वैसा छपा दिया।

दो वर्षों से मैं इस शुभकार्य के अन्वेषण में था, श्री जगदम्बा की इच्छा और आज्ञा से मुझे एक प्राचीनतम् आदर्श प्राप्त हुआ, फिर और भी तीन प्रतियां एकत्रित करके इनके संमेलन से पं. हरभट्टशास्त्री जी के संशोधित आदर्श की भी सहायता से इस संस्करण को पूरा किया। आशा है, अब मूलग्रंथ से इस संस्करण में कोई न्यूनता नहीं रही है। और यह देश का कल्याणकारी होगा।

विषय :-

इस सदुपदेश में श्रीअलख्-ईश्वरी जी ने अद्वैत शैवमत के अनुसार कर्म उपासना और ज्ञान के सदुपदेश किय हैं। राजयोग का क्रम एवं समाधि का वर्णन भी किया है। बाह्ययाग तथा अन्तर्याग, पूर्णाहन्ता और उसका याग भी दर्शाया है। तात्पर्य है, कि योग्य अधिकारी साधक के लिए कोई भी सिद्धान्त इस में छिपा हुआ नहीं है।

श्री अलख्ईश्वरी ट्रस्ट के कार्यकर्ता आजतक ऐसे शुभ कार्यों में अपनी पवित्र भावना तथा निष्काम-वासना से तत्पर हैं। जिन्हों ने

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

आजतक श्रीअलख्ईश्वरी जी के मन्दिर आदि शुभकार्यों के बताने में अपने कायाकष्ट से धन्यवाद के योग्य निष्काम कार्य किये हैं।

इसी ट्रस्ट की पूर्ण–सहानुभूति से मेरे इस संपादन–कार्य में विशेष उत्साह हुआ, अतः मै इस ट्रस्ट को हार्दिक धन्यवाद देता हुआ इसकी सद्भावना को सराहता हूँ।

यह ट्रस्ट दिये हुए संशोधित-पुस्तक के विषय में श्री पं. हरभट्टशास्त्री जी की हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता है, जिन्होंने ट्रस्ट को ५ वर्ष पहले पाठ पुस्तक शुद्ध करके दिया था।

मेरी पूर्ण आशा है–यह मुद्रित संस्करण श्री अलख ईश्वरी जी की पवित्र–वाणी है, अतः श्रद्धालु भक्तजन इसका पाठ करने से जगत् में यश कथा ज्ञान पाकर पारलौकिक श्रेयः प्राप्ति के पात्र बनेंगे। और इस पवित्र–पुस्तक को अपने २ घरों में पूजा स्थान देकर अपने घर तथा परिवार को व्याधियों से रक्षा करेंगे। क्योंकि इसमें श्री अलख ईश्वरी जी का यही वरदान है।

ॐ शम्। संपादक :

१५–९–२००७ शिवनाथ शर्मा शास्त्री

नरवीरस्थान साहित्याचार्यः

श्रीनगर–कश्मीर इत्यादि

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

श्रीरूपभवानी रहस्योपदेशः

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ १ ॥

अभिप्रेतार्थसिध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि ।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ २ ॥

नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यचं शिवरूपिणम् ।
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थसिद्धये ॥ ३ ॥

श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दे ह्यानन्दविग्रहम् ।
यस्य सांनिध्यमात्रेण चिदानन्दायते परम् ॥ ४ ॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ५ ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुः साक्षात्महेश्वरः ।
गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ६ ॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ७ ॥

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया ।
यः साक्षात् कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ।

श्रीगुरवे नमो नमः ।

सहस्र सर्वत्र व्यापी स्वहृथं विचार्यम्
बहुबलं संबाहु एकतं स्वयंबू परमाकारी ।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वाम-रहस्यं ततीःपरमुगती ॥१॥
शुद्ध युक्त-मूलादारः कुण्डली मण्डली गौरी ।
स्पद्द अर्ध सूक्ष्मं सुषुप्ती चक्रःविरक्त शान्तादारी ।
ईश्वरी तुर्यातीत परमानन्दी ।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्यु ततीं परमुगती ॥२॥

१ 'सुहृत्' क. [illegible] 'मङ्गन्' च पाठः ।
२ 'बहुबल्' ग [illegible] 'बहुवाहुक' क. पाठः । ३ 'एकांतं' च. पाठः । ४ [illegible] ग. च. पाठः । ५ 'परमा गती' क. 'परमा गति' [illegible] पाठः । ६ [illegible] च. [illegible] च. पाठ.
७ 'कुण्डलिनी [illegible]' [illegible] पाठः । ८ [illegible] 'सपन' घ. पाठ.

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

तद् रूपमयी [1]तत्परमगवी स्थानी प्र[2]वाही।
गति गट पूरनी छुदा देह [3]तृपितं
सम[4]र्थं स्वामी परमार्थ निदानम्।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य तनी परमगती ॥३॥
उपनिषद् पारिजाता अस्व्ययू फलू एक[5]
अर्थी सदूवर् योगी अ[6]देहो पुरानम्।
बहु तीजुवानी सुशीतल् सुदर्शन्
नि[7]नायु अग्रायु परम् दीफ् प्रसन्नो ॥
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परमगती ॥४॥
पवित्र नेत्र पश्यत सुखी अन्तर्
बाहो बहु-दुनाडी असंख्य काम् कर्तृ।

---

१. "त्वत्" च "तत्परमगीत" क. ख. ग. ङ., पाठः। २. "प्रवाहे" घ पाठः। ३ "तृप्ति" ख. पाठः। ४. "सुमर्थ घ. "मन" ख. पाठः। ५. "अक्षय फल ऐकार्थो" क. अक्कार्थो" क. ख. घ. पाठः। ६. "आदितो" च पाठः। ७. "निवायो" च पाठ। ८ "असाम कामकर्तये" ग. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

यिह्नुय् राजु-यूगी दाता पिता सुय

सर्व कांख्या सु अर्थ पूरनी[1]

अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती ॥५॥

निर्लज्ञा रमनू परिरूफ्[2] निदारा

सृष्ट थ्यथ् संहारी प्रलय च्यथ् ।

अदृष्टो अग्रन्थो निजानो प्रसन्नो[3]

आदिदीव तथ् निहानो निष्कल थ्यररूफ[4] ॥

अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती ॥६॥

लुत्र वित्र न आसा नै गुत्री न बाशी

न कुली न कृत्यं महानन्दरूपम्[5][6] ।

शबुम्-थानु वासी आदि सर्वमध्यं

जिता संन्यासी ध्यनु-बिन्दु-नादा ॥

अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती ॥७॥

---

१ 'अर्थपूरनी' क. ख, ग पाठः । २ 'परकूप' ग. पाठः । ३ 'प्रसन्ना' क. ख. ग. पाठः । ४ 'रूपस' क. ख. ग. च. पाठः । 'रूपम' ग ५ 'न च पुत्र' नास्ति । ६ 'रूफं' ग. । 'रूपस' क. ख पाठः.

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

न जाया न जन्मी दग्दुकर्मकाण्डी
यथा शान्तवस्मी अरूपा स्वरूपम्।
सूह सर्वत्र–सुखी अदेहो समादि
अमोहसावदानं तथ् निष्कल् निराकार्॥
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परमगती॥८॥

अहंत्व-ममता गलिथ् थ्यथ् प्रलय ना आसे
यिथु न आसि-मीलिथ् कमलदर्ल् जलबिन्दु।
मध्य् आकाशी कदाचित् वर्ड़ ना आसे
लगि नं·त क्या व्रांच् फला रस ग्वनी।
शिला जल सगं् अग्न दाह वसो
साद् तार्यि् पसमु सर्व-अन्तर सृष्टी।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती॥९॥

---

१ 'दग्द कर्म कर्मकाण्डी' क. ख पाठः २ 'कदुन्ना' ग पाठः
३ 'युथा न' ख 'यथा' ग. पाठः। ४ 'दल त' क. ख.
ग. प्र कु 'बिन्द' ग. पाठः। ५ 'वृत्त' क. ख. ग पाठः।
६ 'ना' ख पाठः। ७ 'जलगस' ग पाठः। ८ 'तापसा' क. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

वेदवाख्-अर्थी अमृतनदी संप्रीतां[1]
अनेक-प्रवांही समंनय्[2] षोडशचन्द्र कलू ।
स पण्डिता समदर्शगती अर्चनीदीव्
सु-निर्मल तोत्री सथ् तंव[3] पांठि ।
सर्वत्र जगद् गूरु सेवा अनन्तपूजनी एक
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वनि रहस्य् तती परमगती॥१०॥

निर्वाणदशश्लोकी स्तवः ।

ओम् स्वर अन्तर् तथ् निर्मलम्
शुद्धं अत्यन्त् विद्याधरम् ।
लल्-नाम लल् परमां[4] स्वरम्
शिव-माधव नाहं परं ब्रह्म सोहम् ॥ १ ॥
कृपा कूरे सर्व् रूगां[5] हरे

---

१. संपोता' ग. ध. पाठः । २. 'समन्वय' क. ख. ग. पाठः । ३. 'तव पाठ' घ. 'स्तव पाठो' ग. 'तो पाठो' च. पाठः । ४. 'परम स्वरम्' ख. पाठ । ५ 'सर्वरोग' ग. 'रोगन्' ख. पाठ ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

ज्ञांनी छ़ाल् फिरे' तान-तान ब्यसरे ।
समादि-देह समरे सयि अग्नवतूरू
अखंड यज्ञ करे अग्न प्रज्वाले ।
गीता पडे ब्वय् चे़ने कपाल मूचे़
गूपाल जी नाट्यं करे गूपी-सहाय् ॥ २ ॥
युंस हुमसूय् मदुरस् ग्ययि कानि द्यिे
कन्द् हुंहे खंड हुमि पननु दीह् ।
श्रीफल् जाफल् सुफलै ह्यये
मूरिथ शेर नैवेद्यस् ज़य् ॥ ३ ॥
समिव् ब्यकारन् कि-न् अकुय् ब्वय्
पान-ति ब्वयि केंह् यिहुय् अकुय् ।
यज्ञस् ब्यह्य-त बस्म कियवे
अंग न ब्वयि केंह् आंगन् द्राव् ॥ ४ ॥

---

१ 'क्रिर्यस्' ख, पाठः । २ 'नाद्' क. ख. घ 'नाष्ट्' ग. पाठः । ३ युस हाम सूय्' क. ख. पाठः । ४ हुमि' क. ख. ग. पाठः । ५ 'सा ह्ययि' क. ख. पाठः । ६ 'के' क. ख. ग. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

पाता_ ढ़ाल फीरिथ् ता खाड़म्
ग्यचि़-त कज़न् मन्ज़ि अनुम् पथ् ।
अद् नद् वुदुम्-त गल-नद् प्ववुम्
प्रबातुं साथ् स्वंथु प्रज़ालु-तां ना किंह् ॥ ५ ॥
हिज़ि अनि पा़ताल गगन गमे
मूरत् नों मूरत पाँच तत्त्व् ।
च़ीतन् मले शून्य तिह् गले
शन् वूनिय् सा ढ्यस सतें ॥ ६ ॥
आसे व्वये न-आसे पान्द्
नाँसे ग्रास् करे पवन् ।
रसँ् कासे ना किंह् फ़ासे
ना सीर् काँह् आँ सीर व्वय् ॥ ७ ॥

१ 'ता' क. ख ग घादौ नास्ति । २ 'अनुमप्' ग. पाठः । ३ 'थुम' ग, स्वथु प्रज्वलुता' क. ख. ग घ पाठः । ४ 'मूरत् सुरत् ना पञ्च' क.ख.घ. पाठः । ५ 'सामत्' घ. पाठः । ६ 'व्वय्' क. ख. पाठः । ७ 'ना ग्रासि' घ. पाठः । ८ 'नरकस् कासे' क. ख. पाठः । ६ 'व्वह्' क.ख.घ पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

द्रायस्-त न्येरवनु आयहाम् ज़ंगे
चय न-तु कारन् मंगे कस्।
रङ्ग रङ्गी गुल् फ्वलिहाम् अङ्गे
म्य न-त व्यय च्यत्थ् चयङ्गे कस् ॥ ८ ॥

[3] पदवी विना मा त्राव् पादू
त्रादा पूरख आद् छु वासा।
ब्रकनु नावद् ब्रकन खासिय्
परम् पदय् परमानन्द् हासिल् छुह् ॥ ९ ॥

रूपाय् ता यिह आयिय् वरा
नरा निरालम्बा रूफ़।
कृपा पर आनन्द जान् वर्रा
अवतार रूम-रूम रूफ़ ॥ १० ॥

स मुद्र प्याल्-त मदुर वासन

---

१ 'आयिम्' ग पाठः। २ 'फ्वलुहम्' ग. 'फुल्लाह' च पाठः। ३ 'पाद्' पाठः। ४ 'वास्' क पाठः। ५ 'ब्रकनी' खासी' घ ब्रकान् नावद् ब्रकनी खासी परम पद' ग पाठः। ६ 'जान वारः' क ख. ग. पाठः

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

अवय् क्या सन मङ्ग तय् ।
ज्ञान रूप्-तं शून्या आसन
आसुन न–आसुन संतिय् छुह् ॥ ११ ॥

[2]यवय् ध्यान अकचिश् करे
तवय् ज्ञान आदरे पान् ।
यवय ध्याल बस्मूय करे
तवय लय् मुमारे स्मरे पान ॥ १२ ॥

युस् तौख् आवि–तं मोख मिलावे
प्रयना प्रयम लागे प्रार ।
वथरि ज्ञान–त पान तलांडे
शून्यम् शून्या मूत्य मिलावे ॥ १३ ॥

स्वर रत्रावि-त अहा ना मङ्ग
तीर लायि–त्-आवे सङ्ग ।

---

१ '[illegible]' क ख ग पाठः। २ 'यवा' 'तत्रा' इति घ. '[illegible] क [illegible] घ. पाठः। ३ 'मरिन् मै करे' घ च पाठः। ४ '[illegible]' ग.घ.ङ. पाठः। ५ 'प्रैना प्रम लारे प्रार। मथूर' क.ग घ. '[illegible]' क [illegible] ६ '[illegible]' क. पाठः। ७ 'स्वर आवित' क. ख.ग. पाठः। ८ '[illegible]' न

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

शेरे गड़्-तु न्यथूय नाव्र

दूह् पाधि-तं अर्जुम ब्रांहं ॥ १४ ॥

शून्याह् अंशा आयाम् अथे

गज् सुमारुम् तवय् सूत्य ।

यव्-सूत्य-ज़न् ब्वपदांवुम्

तिय् ठहरांतुम् मनस्-सूत्य ॥ १५ ॥

ग्वारिथ् संम्रिथ् शून्या स्तांडुम्

पारुद् मारुम् तवय्-सूत्यय् ।

पंच-अग्ना लाल चड़ांवुम

ग्वाश् प्रज़्ांलुम् तवय-सूत्य ॥ १६ ॥

न करुम् रुत् न यछ ज़ांनुम

ज़ि रुतुय न-त रुतू किंह करुम् नांव ।

मूढ् मुतुय दीह् संदारुम्

---

१ 'पाध्योम' ख. ग पाठः । २ 'ग्रम्' क.ख. पाठ । ३ 'ज्ञान' क.ख.ग.[illegible] पाठः । ४ 'स्वप्नदरम्' क. आदि पाठः । ५ 'स्वम्मारिथ' क. [illegible] पाठः । ६ 'तविय सूतिय' ग पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

न त ज़ीवन्तु मारु माव् ॥ १७ ॥

आगर-फीरिथ् ताय् ग्रज़ोम[१]
बुगवाज़ इरुय सगांवु मांव् ।
ओरय[२] कृपा तिह् आलम् वरुम्
योड् किह् न स्वरुमाव् ॥ १८ ॥

प्रबा[३] ती-ज़य च्चन्दि आदरुम्
रूम-रूम ज्योथ् तरुमांव[४] ।
कृष्णा-रूपी ब्रह्मा म्वरिथ्
स्मरिथ् विष्णु महेश्वरा ॥ १९ ॥

ग्वर-म्वखि ध्याना ध्यायिरे
चरणा हृदय कमल् ।
तुल[५] पवन् मूल शून्या
ऊर्ध्वमुखी गगन मण्डल ॥ २० ॥

---

१ 'फेरथ् तब् ग्रज़ुन्' क. [illegible] पाठः । [illegible] कृपा सुतिथ्' ग. पाठः ।
२ 'योर न [illegible]' [illegible] पाठः । [illegible] ज्वय' ख. घ. पाठः । [illegible]
क. पाठः [illegible] ५ तुल [illegible] 'सत शून्याह' ग. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

नाना-रंग् शास्त्र चतुर्वेद्
पानुय् मान् तह् नद् सग़वान् ।
नाना-प्रकार ध्यानुक् थाना
ज्ञाना नामा अनीक दन् थाना ।
पूरंक् मनय् स्मेरे निराकार् ॥ २१ ॥
सारिथ् गंडु त्राविथ् ग्वाशस् चायस
मारिथ् सारि द्रम् च्यांनि पाञ्छ इन्द्रय् ।
तवय् सहजकलि यूग् साद्यिथ्
सर्ववादि ज्ञानिम् ज्ञान-पानस् स्यंदु ॥ २२ ॥
दस्नी प्रांग्नूम्-तु स्वरने प्ययस्
हरा व्वञ् चूय् बर् वुसरुम् ।
दिम् कोसुम् ज़ारि तो आसुम् चेयि
आस् करूथम्—तय् स्वांस् बरम् ॥ २३ ॥

---

१ '[illegible]' ख. 'मानु' ग. घ पाठः । २ 'स्मरे [illegible]' क. [illegible] पाठः । ३ '[illegible]' ख. पाठः । ४ 'हरा तिय् [illegible] बर् वसुम' ख पाठः । ५ '[illegible] [illegible] [illegible]' ख. पाठः । ६ '[illegible]' क. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

सहज़् सिपर् प्रूरिथ् द्रायस्
दितिनम् ज़ह-पर शाही-त शाह् ।
हिश् छ्यस् सहजस् लागिथ् वाहज़न
ह्यौंति वाह-ज़न् तोतन्-त हार्य गिन्दिमं ॥२४॥
पूरिथ् सहज़ सिपर-तय्
तुरगस् ज़ीना लगू रव् ।
पोशानूलन् तय वीना वज़े
करानी शंख-शब्द तय् ।
गंटा वायान् क्रियनद् वुज़े
दिवान् छ्यस् शंकरस् गंडु ॥ २५ ॥
हाल् मलि तय ज़ाल् वहारे
श्रान् लौंडे मारे मीन् ।
रूग् गालि–तय यूग् संदारे

१ 'वेरिथ्' ख. 'पारिथ' क. ग पाठ. । २ 'सहज़न लागिथ् वहज़न' क. पाठः । ३ 'छ्यतु' ग. पाठः । ४ 'गिन्दम' ग 'गिन्दुमस् घ पाठः । ५ 'वाहन्
। पाठ । ६ 'लार' क. ख पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

बूग आहारि करे शरीर ॥ २६ ॥

घर गौव् सु फ्वलि अंग् सेलने

अंग् सवारे वंग् निवारे

पिह् न फले तिय वले

जन्त्र् तन्त्र् अनाहत् अनामय् अदय् ॥ २७॥

सावदान् खेले अंग् नखावान् रह्

अंग् प्रज़लान् थ्यर वासन् दारान् ।

अटल सावदान् वह् आप् भगवान्

व्वह् शिव-गथ् तय चूह् शिव पान् ॥ २८ ॥

वर् दिथि-त व्वह् नेरन्य--वासां

भूमि पाद् गैमे रसा रसा ।

ख़सान्-त् शब्द शुनुम् आंहंग्

सारंग् राग वीना--त च्यंग् ॥ २९ ॥

---

१ 'धंय वासा' ग. पाठः । २ '[illegible]द गंधा [illegible]' ग. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

युसुय् सहाय सुय पान आसान्
अथवासा शिव—तां शून्या कस्।
युसु व्यह् गाले त्यह् न्यवारे
सुह् शरीर थावे पानस् ब्रोंह् ॥ ३० ॥
पर् वहारे सार्थो तारे
दुयी व्यह् गाले आस तस्
ज्ञानी दर्शन् दियि यख्लासे
तस् पान पानय् कल्पन् कासे ॥ ३१ ॥
नाव् तारा वात्र् सबारा
ना-रंग ना वर्न तु न गूथर्।
ब्रोंह अन् न्यन्दय् पत करि वारय्
के-हंन्दूय् दार्-तु कस् चारे ॥ ३२ ॥
दियि अस्य-ति तारा त्रीय् औतारि

१ 'पानय्' क ख पाठः। २ 'अथ वासनि' 'वासम' क ख ग. पाठः।
३ 'परवारे' क ख. ग पाठ। ४ 'माथा' ग पाठः। ५ वारिय् ख पाठः।
६ 'कहन्दु दारि-त कस् दार' क ख पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

युमु गागन् सुह् सूतिय् छुह् ।
ब्रोंह् ब्रोंह् पकि-त हुह् मांव्र् लोसे
न्यथ्य् पोशि-त सुय् छुय् साथ् ॥ ३३ ॥
यिथिस् वावस् थरू मा खोरे
मुच रांज़ि तह् क्याह् छुस ज़ाफ् ।
चेयथ् वांज़िरिथ् जाथ मांव् सोरे
छिविथ-त थुरिजे कांत क्या रूफ् ॥ ३४ ॥
युस् मनि ह्यये ध्यान-त पानस् ताले
कुँह् न गलि-तु कांसि न गले ।
ज़ागि हरस्-त लाग्यस वेले
पानय् पानस् सूत्य मेले ॥ ६५ ॥
संतोश ममाद् एक आसन् पर
मैं यूँ लगाया प्रयम का पथ् ।

१ 'मत्यु लुय्' क. ख. पाठः । २ 'ब्यन वांजिरिथ्' क. ख. । 'छिन' न पाठ. । ३ 'हिय्' इ पाठः । ४ 'पुनःआसन' ख. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

दृढ़ किया वालवाशी आँखियों का
ज्योती स्वरूपा क्या करूं मेरे से तेरे का।
सूक्ष्म रूप दिखाया तुम्हारी आज्ञा से
तुम्हारे चरण हृदय में वसाया ॥ ३६ ॥
अपने घर आया आप साँई
जो कुछ मैं था सो अब नाहीं।
यह बोध आया गुरू की बडाई
जिन गुरु ने दिया सत का तत्त्व वताई ॥ ३७ ॥
येव तूड़ चलिय् तिमय् वल अंबर्
यव छ्वख्ति चलिय् आसख् तृपथ्।
तिमय् आहार बुख्त् युक्त यूग् कर्
रूग् गलिय् त आसख् म्वख्त्।
तेलियँ निष्कल् तुष्टीय् विशेषा
खेल् मीलिथ्—तय आनन्द च्यनु ॥ ३८ ॥

१ 'यवा' ग.घ. पाठः। २ 'यवा' ग.घ पाठः। ३ 'त्यालि' ग. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

बाग चायिस् बागे आयस्
  परमा-सरस् नारस् त नरस्।
शरने आयस् लल्लीश्वरस
  श्री सत् ग्वरस माधवा शिवस्॥
सीवादीवस् साकारस् निराकारस्
  अन्तरकिस् सत-सूय व्रतस्॥ ३९॥
अहम् पदव् सदा माधव्
  शिव रव् हंसा अनुमं।
म्य-दाव् प्याल बरिम् मां मदाकिय्
  म्य-दाव् हाल प्यवीम् सु-दाव्॥ ४०॥
दीहं आनन्द नद मया
  लूचन प्याला मुचर।
साकय पिलाओ हुह्-हा
  ब्रह् ब्रहा हाहा मंतुवाला॥ ४१॥

१ 'अनिम्' क. पाठः। २ 'बयॅम्' ङ. पाठ.। ३ 'वेहानम्' क. आदि पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

आगर् ग्रज़ि नय् नद् सांज़ी
   वान वरिथ् तांय् फ़िरिथ् खांसि ।
ख्यन कमा—तय् व्यपा नर्
   बरि बरि तांय् पोंत्र् यख्लास् ॥ ४२ ॥

आगर ग्रज़व्रूंस् अमृतूच्य नदा
   रज़व्रूंस् प्रज़लान् मुदा-बूथ् ।
तीलिथ्-त लद्व्रूंस् त्रिन् वुवनन् कदा
   मीलिथ-त समुद्रूच पदवी व्यय् ॥४३॥

होशू मेल-तां पोश् फ्वलांनी
   गोश् खिलांनी सादु—संग ।
गज़् ज्ञानी अव-रूप् ध्यानी
   कृपा च्यान्ज़ी वहु-वांनी रंग ॥ ४४ ॥

सुह् माह शमाह प्रज़लांनी
   तमाह्-व्यन ज़लांनी ब्वह् ।

१ 'आगर [illegible] [illegible] माता उपानय्' क. [illegible] पाठः। २ 'होश [illegible]
[illegible] फ्वलांनी' [illegible] पाठः। ३ 'खलांनी' क. ख. ग. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

अव-रूप् प्रेयम् छुय् मेलांनी
यिमय् पद कैंसि मेलांनी क्याहं ॥ ४५ ॥

मथुरा पथ वोंह् सत-रूप्
मेलुयौ सथ-गथ् त तत्व् ।
तेलुयौ रोय-रंगे हर्-रंग
मेलुयौ आतम–संग–रत्र ॥ ४६ ॥

अवल् करेयिम् कहन् अट्
लट्-दिववनु हांवुनम् थान् ।
शमर्याम् देह् य्यव अवय् वट्
छट् फेरवनु अवय् म्यांनु पान् ॥
तुष्टुम् त कासूनमं नीवन् गट्
ज़न् चाटस ग्वरी वख़नुमं ज्ञान् ॥ ४७ ॥

युसुह ग्वर पिता सुय् छुहं मोल्

---

१ प्रेम छु ख ग पाठः । २ [illegible] ग. 'कँ मलाने क्याह्' 'क्याहव्' ख. ग. पाठः । ३ 'मनरू' [illegible] ख ग पाठः । ४ 'राम रंगि'क ख. ग. पाठः ।
५ 'करेयिन्' ग. पाठः । ६ 'हनुंनम्' ग. पाठ । ७ 'कासूनम' ख. पाठः । ८ 'वख़नस्' 'वखनम्' ग पाठः । ९ 'छुम' ग. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

सुह् इह् प्रबल् दीप-प्रकाश् ।
सुह् इह् सर्व-कलस उदार् ख्वुन्
सुह् इह ईश्वर् सुह छुहँ ग्वर् ॥ ४८ ॥

कंह यिदँ दज़न् व्यह् ह्यायि बारे
ब्वय् ह्यायि हाह्न अच्यस ग्रख् ।
कूह त्रावे वुध्यस् स्वबावे
शंहले चन्दन-दारे काय् ॥ ४९ ॥

युस् ब्वह तां व्ययि व्यचारे
ईन्दय् मांरे ज़न्-म्वंगर् ।
स्यह् तां सादू लांगि अथि् हुनरे
कैंसिए लंगु-न बारे क्याह् ॥ ५० ॥

द्राव् वुफे वाव्–रूपी गुर्
ग्वर ईश्वर् आव् अविनाशी ।

---

१ 'छुप् कय' २ क. य. 'ग. 'गुह्' स्व पाठः । ३ 'स्यहा-न' क पाठः । ४ 'इन्द्रह्' ग. पाठः । ५ 'काग लघु-वार क्याह' क. ख ग 'क्याह्' ख. पाठः । ६ 'रूपी' ग घ. च पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

पान मशे तां द्याना तोशे
स्वमन् परमानन्द् वांतु तथ्-राशी ॥ ५१ ॥
सुह वा अन्दर न्यबर प्रथ् दीशन्
कंय्रव् दीशन् ग्वारान् लूस्तुय् हृह्
च्यथ थव मंडिस अंदर छुय् निशान्
दुशन बालिथ-तं दितम क्वह ॥ ५२ ॥
कत्यन् कृथा करूथ् पान् स्वगानं
यिमन् मन् लगान् पानम सूत्य ।
इह व्यूह त्राविथ सु देह-साधनं
वातिथ् वानस लाल-रत्न् कथ वानस् कुसु ॥ ५३ ॥
नव् पाठ् ज़ानस तव पाठ् पडें
नव् ज़प जान् सुह् माल् फिर ।
स मुद्रा हाव्-तं यव् मदुरु प्याला च्यम्

१ 'लुख तुम हृह' क. पाठः । २ 'न' नास्ति क. पुस्तके 'दितम' ग. पाठः।
३ 'करुथ् पान स्वगान' [illegible] पाठः [illegible]
'सादान' क. [illegible]

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

नद् नाल रटु व्वयिनय ज़य-रत्न-माल ॥५४॥

नव् पाठ् ज़ानस् तव् पाठ् पडं
सुह पाठ् पानय् मने वातुं।
ज़पान् आत्म त दपान् वांनी
पीव् मदु-रस् बाज़ि बरिथ्-तां छिव् ॥ ५५ ॥

तिथु ध्याना ह्यत यिथु ज़ानस् अन्त्
तिथु सहज़ दि-त यिथु पानस् म्य चह्-त।
तिथु व्यय् चह लाग्-त यिथु बहुत शंकर-बखूच्
यिथु पानस् मंचूरावनस् नें कुँह् ॥ ५६ ॥

इह्नय् कुंल् मूल त श्वांह् तुल्
यवा शाख पन-तां फ़ल्।
दात पप्यव् स मुद्रा पान
रसे सवाँद त नन्यस् बोयं ॥ ५७ ॥

---

१ 'पर' क. ग. पाठः। २ 'पान मन वाचू' क. ग 'पान मिनि वाचू' घ. पाठः। ३ 'बरि नाय्' क. घ. ङ. पाठः। ४ 'न हिवु' क. 'न सुह' ग. पाठः। ५ 'शाह' क. स्वादि पाठः। ६ 'रव' क. ख. पाठः। ७ 'स्वाद' ग. पाठः। ८ 'नन्यस् ज़ाथ्' ग. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

मन्दु स-मुदुर् दोनु सांनी

छ्वकु समाद् नाद-विन्द् चट्

दान अखंड मिलाथो मस्न

सादिकारिस द्रायाम् ग्यवे ॥ ५८ ॥

तत्र रूप यज्ञा हूमस् कारिथ्

आहुत दिचूस् अगन् हूँज़ ।

ज्योत् पर्ज़ाने कारनु च्याने

माने अतूर-त नन्यस् व्वय ॥ ५९ ॥

वान् फुटरि-तु पानय् थुरे

कुमु मरि-ता कस् लागि द्वख् ।

पानय् नहावे पानय् पूरे

कुँमु सोगि–तु कस् यियि दूख् ॥ ६० ॥

अथ जिन्सस् अंशा थँवुनै

---

१ 'गव' ख ग. पाठः। २ 'जा नन्य न सा' क ख पाठः। ३ 'कुव्' क. ख. ग. पाठः। ४ 'पुतु सोर' क. आदि पाठः। ५ 'पायुन्' क. ख. ग. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

अथ्य कौंसि-न चीतन् थवुन् ।

तति ज़न् अनुन्-त पूँक्रा फीरिथ ता

न्यायुन् ब्यय् मिलावुन् गंजन् सूत्य् ॥ ६१ ॥

यिवान् पान-त ज़्यवान् पानु

रिवान् पान-त निवान् टूख् ।

नाना प्रकार गिन्दान् पानु

रिन्दान् पानु-त ह्यवान् पत्थ् ॥ ६२ ॥

प्ययान् स्वादस् त यिवान् नादस्

वादस् अथ चास छुनु च्योरय्

पीवान प्याल्-त छिवान् पानु

ब्ववान पानु-त चवान टख् ॥ ६३ ॥

रंगिथ वंय द्रायिस् संग-कुय्

म्वक्त म्वख्चू ज्ञान अकुय् ।

---

१ 'थावुन्' क. ख. ग पाठ. । २ 'न्यावुन्' क ख. ग. पाठः । ३ ... वादि पाठः । ४ 'च्याल रस' क. ख. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

ब्वय वख़चू–रूफ़् गारानं ना किंह
वंय न कूँह ब्वय्–तां ना कूँह् ब्वह् ॥ ६४ ॥
ध्यान आसख् आस–त् चूयूँ
ज्ञान ग्वाश–त् ग्वाह् आसख् चूय ।
विज्ञाना ला-शक मंशख् चूयू
आसखू चूय ता ब्वह् ना कुँह ॥ ६५ ॥
मंड्ड युसु ज़ाले नारय
दंड्ड नौव् इह संसारूय् ।
दड्ड सु-ज़िथि न-तां मरे
रचड्ड युसु गाले सांरी आंर् ॥ ६६ ॥
सारी बुग्–आहारे निराहार्
न निन्द्रे आसि न हुसि आर
रहिथ् सौंरे कर्म न्यथ् बेकार्

---

१ 'गारान्' क ख ग पाठः। २ 'बुंये न न कूँह बखु' क. ख. पाठः।
३ 'चूय्' क ख पाठः एवमग्रेऽपि। ४ 'मद युसु नार ज्वालें' क ख. पाठः।
५ 'ज्ञाले' घ ङ पाठः। ६ 'सांरि' क. ख. पाठः। ७ 'सारि' क. ख.

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

रम-रम् आयि अवतार ॥ ६७ ॥

॥ ध्यानस् म्य चूह्-त पानय् व्वह् चूह
अथि् ज्ञानय् च्य म्य नमस्कार ।
पानय् पान् पर्ज़ानि-त पानय् व्यचे
न-त अन् ज़ानस् व्यचिय् ज़ानिथ् कूँह् ॥ ६८ ॥

छुह शाह-त गदा सुय-तते
पानय् दात् ख़सान् पूरि रव् ।
कुनि गौव् रय्पय् कुनि गौव् व्रूरे
फल्-कुलिनूय मूरे रव् ॥ ६९ ॥

कुनि तमाह कुनि तकावूरे
शमा युथ् होरं पूरे रव् ।
पव् पव् पलि तम तस् ना मूरे
वांतित वात्यस् पूरे रव् ॥ ७० ॥

१ [illegible]
४ 'नियय पय्' [illegible] 'न्रुक' [illegible] पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

कृपा-त कारुन् युस् पानय् ज़ाने
मनूय् माने दिन्-तय् राथ
सर्वरूपु-ध्याना युस् पर्ज़ाने
माने मनि-त नन्यस् ज़ाथ ॥ ७१ ॥
युस रूप तारि-त दीफ् संदारे
नाथ सुह् नृप व्यचारे मन् ।
किंह मूदि-त किंह् बेमारे
कैंसि ज्ञानु-खूरे तारे नाव् ॥ ७२ ॥
माता रूपी सु म्वदुर् दाम तु-पीव्
तथ् तपासिय् मदु म्वदुर् पीव् ।
दंडा चडे तथ् रूपी
ख्व-रूपी त्रिन्नाविन् ॥ ७३ ॥
अन्दुर त्रुंग्नि-तु न्यबूर् स्यंदि

---

१. "मनय् मारे" ग. पाठः । २. "मानि मनि" क. ख. ड. पाठः । ३. "नाथ् युस विचारे" क. ख. पाठः । ४. "खूड़" न पाठः । ६. "दड़ा चरे" ग. पाठः

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

वुदिखॅ् नाग् तु ज़ागुख् तंथि ।
किंह् बेमारि रस्तिय् मूदी
किंचन विंदु-नत रूंदिय् तत्य् ॥ ७४ ॥
ना नमुस न कदाचित् नमंनु
निथ् मनु यम्य सदा सर्वदा ।
आकाश-रूपु ज़ागि-अन्तर् रमंनु
तंथि नमुस् तथा सुह् नमंनु ॥ ७५ ॥
पद् ह्ययि-त पाद् छुह् मंगान्
अंगन् अंगन् अप्योम् रूफ् ।
अंग्न-कुड् यिथु रूफ् संदारे
अमृत् दारे पीवान् दीह् ॥ ७६ ॥
पान् सुह मानि-तु व्ययन् सवारे
निश काटस् तारे चन्दन् बोग ।

---

१. "वुवुस्" क. ख. पाठ । २. "नीतिय्" ख. पाठः ।
३. "नित ममन्" ग. ङ. पाठः । ५. "छुम अगान्" ग पाठः
४. "रफ्" क पतितपाठः । ६. "बिय् न स्वारे" ग. घ. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

काठ् यिथ् बोय् हायि चन्दन-दारे
सहज़ूय् गारि-तु नन्यस् जाय् ॥ ७७ ॥
दाथ् चालि-तु क्याह् व्यचारे
पानु मरे तय् संदारे व्यय्
व्यह् गालि-त अमृत् तारे
तिथुयय् रूप चय वरिय् क्याह् ॥ ७८ ॥
अर्पाविथ् ज़न्म चिदानन्द्
हंसद्वार् रव-रग् ता रूम्³ ।
कृपा ज्ञान कारुन् कर्म्
दर्म् सूत्य निरालम्बा रूफ् ॥ ७९ ॥
यति कुनि वुछ्यन् नाँति पानय्
सर्वव्यानूय् रटुमस् रूफ् ।
दीप प्रकाश तीज़ रव पानय्

१ 'ग्यारि-त' ग. घ ङ पाठः २ 'गालि-त क्या त विचारे' क. ख. पाठः।
३ 'रूफ' ख. ग. पाठः। ४ 'नाँत लुय् पानय' क. आदि पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

म्य ज़ान्योंव् मुह् ज़ि म्यानि छुह् ॥ ८० ॥

ज्ञान आकाश् वांनी निर्वांनी

मनि सहाय थान्-थानय् छुह् ।

आ राम ही राम् वोलो पवन्

ब्वह् ब्यय-नां म्यानिय् छ्युयह् ॥ ८१ ॥

शये आसख् शये छुयस्

लये पानु ब्वयिय् छुयस् ।

नीरिथ्-तु गछ़ान् तलिथ्-तु यिवान्

मीलिथ् पान् तोत्य देयुय् छुस् ॥ ८२ ॥

नादुय् विन्द् पदुय् परम्

मदुय् मारि-फतुकुय् छुयस् ।

विष्णु—ब्रह्मा महेश्वरा

कृष्ण् ब्यय् श्याम-सुन्दर् छुस् ॥ ८३ ॥

१. "म्यानि छुह्" ख. ग. पाठः ।

२. "आ रामे राम वालो पवान्" ख. बोलो पान' ग. पाठः ।

३. "दा[illegible]स् छुस्" क. ग. घ. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

गोम ओवतार सुह् महादीव्
सुह् वा सुह् वा सुयय् ख्रयुस्।
पुरा तोले रामा ब्रोले
ब्रह्म-स्वामी मन्दोरि त्रुस्।
यिह् किह् काँत्रि तिह्–किह् दिये
दुकान् त्रपित समुद्रय् त्रेस् ॥ ८४ ॥
दिशान्-तु दीशन हेरान गयिम्
निशान् म्य-अनुमस् शुन्यालय्।
छलु लँदु चर्कस–तु कल् आयि मशान्
यिमन् शन् मानि ह्रशान् व्रय् ॥ ८५ ॥
त्रु–नु कुने त्रु–ना कुने
वुत्रह् आर् न योड् न कुने।
दिय् फश तेँले मूल न कुने

---

१ 'राम ओवतार' ङ पाठः। २ 'ख्रुयस' ग पाठः। ३ 'अनुम' ग.घ. 'अनुम' ङ पाठः ४ 'लदुमस' [illegible] ख पाठः। ५ 'सानी [illegible]' क. आदि पाठः। ६ '[illegible]' [illegible] ङ पाठः। ७ 'ताल' क, आदि पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahida Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu - 180002. Digitized by eGangotri

छिवय् चीतन् त स्वरि-तोन् कुने ॥ ८६ ॥

भ्योर्-ति ज़ीवा योर्-ति ज़ीवा
जीवस् जीवा रस् ल्यावान् ।
युसु छुपुह् नाना-रंग रुवुनु
छुह प्रथ् कुने वातवंनु
च्यानु म्यांनु ल्वांनु बिंनु बिंनु तय्
न-त रानु सानुय् अकुयं तय् ॥ ८७ ॥
न पृथ्वी न प्यठ्ठी न पातांली
न तली न पांरी नापारा च्वपांरी ज़ायथ् ।
अन्तरा शुद्दम् सुशान्तम्
निर्मलम् सर्व तथ् दावा दीव् ॥ ८८ ॥
कौन् मर-ता कौन् प्यतारे
समुद्रस सार तारे थाह् ।

---

१ 'भोरूति ज़ीवा योरु-ति' क. ख. पाठः । २ 'रुनारवनु' ख. 'रंगारवनु' [illegible] ग. पाठः । ३ ल्वानु बिनु न. म. ग पाठः । ४ '[illegible]' ख. [illegible] [illegible] । ५ पारी च्वपारी क. ख ङ. पाठः । ६ 'हूँह न मांस-न [illegible]' [illegible] ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

मदु-रस गंड्‌ ता शांश औनारे

पानस् पान् पुशांरे गाह् ॥ ८९ ॥

झमालय् शून्‌ यवय् ल्युख पावुम्

तवय् पॉन्‌ स्मारुम् एका अन्त।

न दाह् दिये ना कंज़् प्रावे

ठह्‌रावे न तु खिहनावे ॥ ९० ॥

कांति पूरे अकांतित वाने

पानय् दाता बुखना आसे।

वासंज़ि गाल्‍ले बाँथा वाते

नाना-रंग सीर् नाथा वाते ॥ ९१ ॥

माता पिता त भ्राता पानय्

प्रथ् थानय् न कथ् नये।

निराकार रूप लांगिथ् पानय्

---

१ '...नुय ... आदि ... पंज़ स्मारुम् एकान्‌' ग पाठ ... खिहनावे ... ' ग पाठः। ४ लागे' ग 'गालि-त बाथ' ... ' पाठः ... ' ग पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

सथ् पानय्-तु कथ् सनु नये ॥ ६२ ॥

कौन जाने तेरा स्वभाव

प्रभाव परमानन्दा जी।

जो स्मरे हृदय में पावे

जैसी प्रभा भास्करा जी ॥ ६३ ॥

सारी तत्त्व् आहांरिम् गार् चापुम्

भ्रमवांवुम् अखंडु मण्डल् तां पाताल।

द्वा-हु सुतिन् ग्यव व्यगलांवुम्

अङ्ग नांवुम् विशेषा गंग् ॥ ६४ ॥

च्यथय् लगिय-तु पर्दुय पान ज्ञान्

च्यत्थुय लगिय् पर्ज़ान् पान्।

च्यत्थुय लगिय् ल्यठु छुयय्-तु पर्ज़ान

ल्यंठु ज्ञान् म्यूंठु-तु श्वद ज्ञान् पान ॥ ६५ ॥

वाव् रठ् द्वादशान्तु[3] रव् संगटे

१ 'न कथ' क ख ग. पाठः। २ 'पर्ज़ान' ग पाठः। ३ 'द्वादश रव' क. ख म पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

मायाय तृष्णाय् मारे मन् ।
आँथ त्राव् नाथ् छुय् पननि गरे
साथ् रठ् सुय-तु ज्ञानदीह ॥ ९६ ॥
वाव व्यन् व्यन्-तु नाव् छुस् केठान्
ऐठन् अंगन् अकुय् पय् ।
लय् पवनस् म्वय छुयुय् बानस्
मानुन्-तु पानस् निश छुयय् दय् ॥ ९७ ॥
मूर्खाह् करिथ्-तु अमूरथ् पचीय्
खाख् छय-तांय् क्याह् पचे ।
पँच महाबूत् करिन् फचे
हांचू माया तय् करि-ना वुंत् ॥ ९८ ॥
मनि गालि-तुँ पानय् व्यचे
अहं गारि-तुँ क्याह सनु यछे

---

१ 'नाव छुम' क. ख. पाठः । २ 'करिनम' क. ख. पाठः । ३ '[illegible] ख पाठः । ४ 'लागित' ख ग. ङ. 'लालित' क. पाठः । ५ '[illegible] घ. ङ पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

ल्यपन् ठडि डांलि–त पानय् नच़े

वाह्-वाह गुंलि् फ्वलि्-ना तुल्-ना मूल् ॥९९॥

गंडिथ्–त डेंटोने द्रायय् च्वह् तस्

क्याह् लबान् तस् आसन जाय् ।

न व्वपि गाफ् तस् न पुत्र स्वय् तस्

आसान् व्वय् तस् न आसान्–जाय् ॥१००॥

संबूर–एरूं वातान् च्वह् तस्

तंबूर–साजय् गूं यस् व्वय् ।

शशि दारि लव दिंमहा च्वह् तस्

गंबूर–तांतस् क्य ह् वाल्याह् ॥१०१॥

अनंकु नंजू मेज्यांमादर्यान्

अचय् स्ववाव आव् स्वरूफ् ।

ना किंह् थवु–तु ना किंह त्रावु

[illegible]
[illegible]

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

जहु दीप आवु नह छिपा रूफ् ॥ १०२॥

आकाशु सुह मदुर वछुम दारु
तवय-तारु रटुमस् पतृ ।
दीपा शशि-रवृ रूप औतारे
बहु-आकार न-तु निराकार ॥१०३॥

युस्-सा कन्दि वस्मा करे
पसमंद् तिहन्दु शून्या-रूफ् ।
शास्तर् शस्तर् क्याह मूचरे
लुहारु-अग्नु सुह मार्यम दीह् ।
किह-नु सुह मंगे क्याहं नु स्मरं
ध्यानु सुह वरे विय-तु पानु ॥ १०४॥

अनाहतु शब्द मना गंडिथ्
पान मंडिथ् रिशीपस ।

१ [illegible]
२ [illegible]

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

हाकै वानु वरिथ्-त पानु
　　साकै वाकय् आसि दानिस्त् ॥ १०४ ॥
दूर चल तह् हुरय् कांछयह्
　　पूरे खसि ह्यम आयित् ।
सुय् शन् आर्यानु क्चरुनय्
　　न शीतल् शीतल् माह् ब्वख् ॥ १०६ ॥
दंर्याव्-अन्दर् अंशाह् आव्
　　ज़ाव् म्यच्य-तु ज़ायिस् म्यचू ।
म्यच्यय् वृग-तु न्यामचू ख्याव्
　　म्यचिय् करुस् पांरिज़ान्
अवय् म्यचि वच्योव् म्यह चृह्
　　पतोह् आपिथ् म्यचिय् गव् ॥ १०७ ॥
आयात् वर् ह्यथ् यति स्वर रहुस्-ना
　　समुरुन् म्यचे पाज़ु तु वाव ।

१ 'रहस [illegible]' [illegible] पाठः । [illegible] न [illegible] पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

अग्न् आव्-तु वाह वाह रंग् प्यव्
नचान् त्रचान् सपुनुस् नाव् ।
आज्ञा आयि-तु चलु हा चूर्-ज़न्
वाव् आंसु ब्वदन्यत् क्यथ सन् प्यव् ॥१०८॥
रहे निशाना ईश्वर-सुन्दु नावा
कति आयाव्-तु कंतु-सन गव् ।
समरिथ्-तु सादिथ् तंमि कजाव्
दीव ह्यत मुरली तु संवि करहास् ॥ १०९ ॥
छुननस् लूव्र क्रूद काम मूह मद् अहंकार
चाव् संसारस् तु अमल् कर्यस् ।
पतोह आंमाल् अमल् हारने गाव्
प्यंत्र आयाव-तु कत्र क्या निये ॥११०॥
ईश्वरि वाद् ह्यथ् य्यत कजाव्

---

१ ' वयवस्-न स पाठ: । २ ' ामस प. द ह.ाप प. क्राद पाठः ।
३ ' त प. ह.ंदपु नाम्न ' ह्र्वां ' च. पाठ. ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

यति आवं·त आसु मनुष्या-रूफ् ।
मुमुह् देव स्वरि मनस्-त वाव प्रथ जुवस्
तिम् जूह् सीव् कस् मालि अथे आय् ॥१११॥

तिमय् छिय् मनुष्य न·तु किंह् द्राय गुपन्
यिमन् आदन् सुह् पान मशिथ् गव् ।
प्ययख् बुडिथ् चीतन् मु-न्दन सोर्यख्
वैर्यञि वानु कति मालि दरकार् यियें ॥११२॥

सहज-तु आनन्द् रह हा दारिथ्
पानय् पान् मंदारिथ् क्यथ् ।
रूपाय् च्याज़े गछ-हा तरिथ्
ईश्वर-रूफ् स्वरिथ् तह क्यथ् ॥११३॥

सहज-तु ज्ञानु रज्यम् परमानन्द्
अव-रूपु सानन्द् आसिय् कोई ।

---

१ 'स्वरि' ख. ग. पाठः । २ 'छुपन' क. ख. पाठः । ३ 'यिय्'ख. पाठः । ४ 'छिय्' ग. घ पाठः। ५ 'सहज़' न' ग पाठः । ६ 'सहिय्...' ...पाठः । ७ 'आसेव् तंय' ग. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

आत्मा रज्यय् वांचू मा स नद्
मदुं सा सुह् नद् वहं वत्री ॥ ११४ ॥

ॐ श्रीगुरवे नमः ।

बू यो न बीजम् तोया न तीज़म्
वायु नाकाशम् अवां ताह सर्वम् ।
न ज़ि ब्रह्माण्डम् न च स्वात्म-आत्मम्
शक्ति स्वरूपम् परं ब्रह्म सोहम् ॥ १ ॥

पुरुषो न पुरुषात् विमर्शो न मर्शात्
वर्ना-तीज़ो शान्तं अन्तर् आकाशम् ।
सुक्ष्मो न विस्तार् न परं व्यापारम्
न अन्तदारम् परं ब्रह्म सोहम् ॥ २ ॥

थावर् न ज़ंगम् नह् चतुर्वर्णम्
ज़ग् न चराचर् तथ् परमाकारम् ।
सथ् नां असतु अछिन्नदारम्

१ 'मदुरसा' क आदि पाठः । २ 'अन्तता' क. ख पाठः । ३ '[illegible]
[illegible] पाठः । ४ 'सप्तसर्ताछिन्नदारम्' ग. घ पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

सुक्ष्मो समादि परं ब्रह्म सोहम् ॥ ३ ॥

जोगो जुगान्तरं संन्यास-वर्णम्[1]

तुरीया-अतीता तथ प्रसिन्दोऽहम्[2] ।

अचिन्त्यरूपं परमाकारम्

ध्यर केवलोऽहम् परं ब्रह्म सोहम् ॥ ४ ॥

माता न पिता भ्राता न बन्दु

वार्ता स वेदम् एको केवलोहम् ।

ग्वरू न चेला मन्त्रो न लीला

तथ युस् अकेला परं ब्रह्म सोहम् ॥ ५ ॥

मोहो न ब्वदि नच वैराग्यम्

नच राग-दोषंभ्[3] निर्वैरशान्तिः ।

स्वपन् नु ज़ाग्रथ् तथ शुद्दबोदम्

सुक्ष्मो स्वयम्बू परं ब्रह्म सोहम् ॥ ६ ॥

पादू न बीजम्[4] चतुर्बुजाकारम्

---

१ 'ओगन्तर्' ग घ न पाठः। २ 'प्रसिद्धोहम्' क. आदि पाठः'
३ 'द्वषम्' क. पाठः। ४ 'बीजन्' ग. घ ङ पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

न त्रि-जग् चराचर् अनन्तरूपम् ।
सहस्रनामम् निरादारम्
शुद्ध-स्वरूपम् परं ब्रह्म सोहम् ॥ ७ ॥
स्पदु न स्यजू विद्या न गति
रिद् न परीक्षा आकाश-रूपम् ।
खगाकाश् उल्लंगिथ् नच राज़योगम्
नु लम्ब् न निरालंब परं ब्रह्म सोहम् ॥ ८ ॥
रूपं न रस् नु स्पर्श् गन्द् न देहो
दुयी दयस् म लुस् केवलोहम् ।
ज़ीवो जीवता न वर्ता न वार्ता
कर्ता सहोकार् परं ब्रह्म सोहम् ॥ ९ ॥
इडा न पिङ्गला नच ब्रह्मनाडी
स्वयिय् सुषुम्ना पायाहमेव ।
अनाहत् अनामय तुरायाऽवस्था

---

१ [illegible] पाठः। २ [illegible]
[illegible]

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

आनन्दरूपं परं ब्रह्म सोहम् ॥ १० ॥

इति स्वानुभवोल्लासदशकम् ।

तथ् अन्तर दृष्टि संवांवुम्
यिह् म्य त्रावुम् तिह् आंवुम् नये ।
लल्ल् माधव शिव् ईकावुम्
व्यकावुम् दीह् म्य पानये ।
च्यतथ अन्तर मन्जलि सावुम्
ललावुम्-तु म्य बांवुम नये ।
पूर-विचार् प्रागित् आवुम् ।
यिह् म्य त्रांवुम् तिह् आंवुम्-नये ॥ २
यपि तराज़ि दीह् संवावुम्
नावु आंवुम् सुय् पानये ।
मन सथ-असथ् सिरावुम्[3]

१. कुत्र कर्णादि पाठः । २ 'प्रगितु' च. पाठः । ३ 'सिरावुम' घ
ड. 'सिरावुम' रव पाठ

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

लांनु त्रांवुम्-तु कुस् म्वल् दिये ।
ठ्वज़् म्यान् सॉरुय तवय् छुस् सांवुय्
यिह् म्य त्रांवुम् तिह् आंवुम्—नये ॥ ३ ॥

दीह—अन्तर सुषुप्त् सांवुम्
जागांवुम् तुरीया आये ।
अनाहत् आनन्द खिलांवुम्
मिलांवुम् अनामय् च्यये ।
तद्-रूप म्य—पान ललांवुम्
व्वह् छ्यस् सांदु-तु किंह् रांवुम्—नये ॥ ४ ॥

कलि—कलि मिलवांवुम्¹
ललांवुव् रूफ् पानये ।
तव अन्तर् दीह नांवुम्
पीवांवुम् रस् पानये ।
तव तुष्टि निदाना प्रांवुम्

पिमनावुम नाज्ञ हावुम क. ख. ग. पाठः ।
CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri
१ 'फ्रुष्ठ' क. गाठ

ब्वह छ्यस् सांवु-त किंह् रांवुम्-नये ॥ ५ ॥

ब्वद् रुययम् च्ययम् प्रखटेयम्

च्योम् वैराग्यं अत्नय् दाम् ।

हन् गूचर व्यचार् सांवुम्

निनावु रिशियस् तवय् ।

आदि श्रुथ आचारैवुम्

ब्वह् छ्यस् सांवु-त किंह् रांवुम्-नये ॥ ६ ॥

म खूचस् न कूँह् लज्जुम्

ब्वपजु तिय् पानय् आंनुम् ।

म म्य करु-त न सांपनु

रंजु सहज हीत् अवय् ।

रीच-तीच-तु मीच निब्रावुम्

ब्वह् छ्यस् सांवु-त किंहँ रांवुम् नये ॥ ७ ॥

---

१ 'किर् म' न. पाठ । २ 'निनावु रिशास्' घ पाठः । ३ 'आचार आ. क. आदि पाठः । ४ 'मादि' क. पाठः । ५ 'लज्जुम्' च पाठः । ६ ...
क. आदि पाठ ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

तत्त्व प्रसंदिथ् दय् प्रावुम्
अङ्ग गालिथ् ज़ग मा म्वये
ना ख़ोच नालवन् करि-ज़े
प्राज़ि न्यर्मल् श्वद शिवय् ॥
दिन् प्रलय् तक् एकावुम्
ब्वह् छ्यस् सांवु किंह् रावुम् नये ॥ ८ ॥
एकतु परमवूद सदानन्द
तासि विदीह समाद यस स्वर् आसे।
रिदू स्यजू विद्या युसु आदरु आसि।
तत्पदवां रसे विय् क्याह् आसे ॥ ९ ॥
रिद्ध-स्यद्ध-विद्या प्राज़ि आगरय्
तासि गरय् व्यवव् सागरय् ग्वाह्।
करि सूर्य उदय् चलि गटकारूय्

१ 'तत् प्र[illegible] उदय्' ग. 'उदय' [illegible] 'प्रर दि उद[illegible]' [illegible] २ 'लागिथ्' घ. पाठः। ३ 'ज़गमा [illegible]र्वा' च. पाठः। ४ 'न. [illegible]' [illegible] लोकाव ग. पाठः। ५ 'तथ्' क. [illegible] पाठः। ६ 'तस' च. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

सहज्र विचार तथ् सारबूद् ॥ १० ॥

अत् सय् तत्त्वबूद् थ्वंहि आचारा
इय् व्यवहारा वीद्—तां यूग् ।
यह् कुस् व्वह् कुस् कूँह् व्वचारा
अंछिन्न—दारा सुय् चेन् रूफ् ॥ ११ ॥

पिंड् रूफ् सुह् रूफ् पर—रूफ् क्ले
आव क्ले निरंज़ना रूफ् ।
शिर शुब लूवस् ज़ान्-वेगवले
अज़रामर् आसे अद्-दीह ॥ १२ ॥

ओं तत्सत् ॥ आदितः श्लोकाः १४६ ॥

इति श्रीकालिकादेव्यवताररूपायाः श्रीमाधवदरस्यात्मजायास्त-
पस्विन्या रूपभवान्या रहस्योपदेशः समाप्तः ।

---

१ 'कर्ति' ख. पाठः । २ 'सूत्र न आव' ड. कारि पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri